

‘भयमुक्त कक्षा’ बनाने में मददगार तरीके

राकेश शिवनाथ राजपूत

सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों के मन में भय बैठ जाना उनके भावनात्मक और मानसिक विकास को बाधित करता है। इससे उनका कक्षा की बातचीत में शामिल होना तथा अपने विचार व्यक्त करने का ज़रूरी काम नहीं हो पाता है, और विद्यार्थी धीरे-धीरे खुद को ‘न सीख पाने वाला’ मानने लगते हैं। इस लेख में, ऐसी ही चुनौतियों का सामना कर रहे डरे-सहमे विद्यार्थियों को सक्रिय सीखने वाला बनाने के सार्थक प्रयासों के अनुभव दर्ज हैं।

मैं कक्षा 6 का क्लास टीचर हूँ। मेरी कक्षा में 29 विद्यार्थी हैं। जब इस विद्यालय में काम शुरू किया तब प्रधानाध्यापक ने मुझे उन तरीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जिन्हें मैं पहले सफलतापूर्वक आजमा चुका हूँ। उनके भरोसे ने मुझे ऐसा माहौल बनाने में मदद की जहाँ विद्यार्थी बिना किसी डर या हिचक के सीख सकें।

विद्यार्थियों के साथ अपनी पहली बातचीत में उन्हें बताया कि हमारी कक्षा में किसी को कोई सज़ा नहीं दी जाएगी। यह सुनकर पूरी कक्षा एकदम शान्त रही। विद्यार्थियों के चेहरों पर अविश्वास साफ़ झलक रहा था। उनके लिए यह विचार नया और अनजाना-सा था। कई विद्यालयों में, अनुशासन और कक्षा को नियंत्रित करने के नाम पर आमतौर पर कोई-न-कोई दण्ड दिया जाता है। विद्यार्थी इसी सोच के साथ बड़े होते हैं कि डर सीखने की प्रक्रिया का एक अहम हिस्सा है। यहीं से मैंने भयमुक्त कक्षा को लेकर काम शुरू कर दिया।

पहली चुनौती थी विद्यार्थियों में आत्मविश्वास जगाना

विद्यार्थियों से बातचीत के दौरान ही मैं समझ गया कि 29 में से 10-12 विद्यार्थी कक्षा की गतिविधियों में भाग नहीं ले रहे हैं। कारण जानने पर हिमांशु ने बताया कि उसे अंग्रेज़ी और कक्षा के अन्य कार्यों, जैसे श्रुतलेख या इमला (डिक्टेशन), सवाल-जवाब, पाठ्यपुस्तक के अभ्यास, वगैरह से डर लगता है। संजना और प्रिया ने बताया कि अगर वे कोई गलती करेंगे तो दूसरे विद्यार्थी उन पर हँसेंगे। तृप्ति ने बताया कि उसे कक्षा का माहौल पसन्द नहीं। अन्य विद्यार्थियों ने भी कुछ इसी तरह की बातें बताईं।

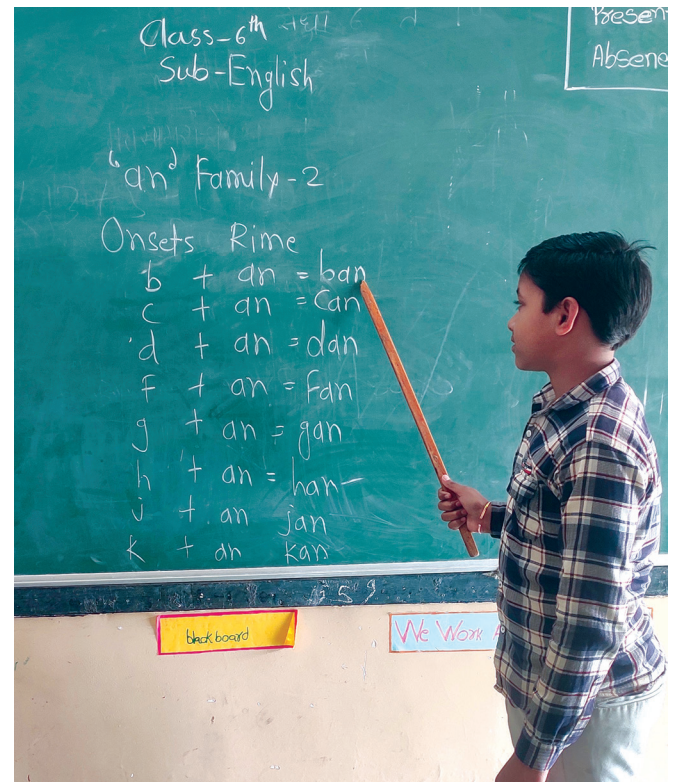
विद्यार्थियों की आशंकाओं को दूर कर उनमें आत्मविश्वास जगाना मेरे लिए काफ़ी चुनौतीपूर्ण था, क्योंकि शुरू में उन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई। जब मैं उनसे नियमित रूप से बातचीत करने लगा तो वे खुलकर अपनी बातें साझा करने लगे। हर दिन पहले कालखण्ड में, मैं विद्यार्थियों के साथ 10 मिनट बातचीत करता, और उनकी पसन्द-नापसन्द के बारे में जानने की कोशिश करता।

विद्यार्थियों की रुचि के हिसाब से मैंने कुछ खास तरह की गतिविधियाँ तैयार कीं। मसलन, चित्रकारी से जुड़े हुए काम, क्योंकि उन्हें इसमें बहुत मज़ा आता था। सभी को अपनी

पसन्द की कोई भी चीज़ बनाकर दिखाने के लिए कहा। उनकी चित्रकारी की सराहना की।

कुछ दिनों बाद, मैंने उनके साथ ‘ऑनसेट’ और ‘राइम’ पर काम करना शुरू किया। उन्हें कई शब्द परिवारों से परिचित कराया। बताया कि शुरुआत, मध्य और अन्त की ध्वनियों का प्रयोग करके शब्द कैसे बनते हैं। जैसे—pat, bat, mat, pen, men, वगैरह। उन्होंने वर्कशीट भी हल कीं। वे उन सवालों को हल करने में सक्रियता दिखा रहे थे जिन्हें मैं बोर्ड पर लिख रहा था। इससे उनके पढ़ने व लिखने के कौशल में सुधार आने लगा, और उनका आत्मविश्वास भी बढ़ा।

समय बीतने के साथ विद्यार्थियों का विषयों और मेरे प्रति डर कम होने लगा। उन्हें कक्षा का माहौल भी अच्छा लगने लगा। बाद में, सुबह की सभा में उनसे नोटबुक में किया गया काम



चित्र 1: ऑनसेट्स राइम (Onsets Rime) पर काम करता विद्यार्थी

दिखाने के लिए कहा। उन्होंने बड़ी खुशी से सभी शिक्षकों व अन्य विद्यार्थियों साथ अपने 'ऑनसेट' और 'राइम' से जुड़े काम को साझा किया।

विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि को समझना

मैंने विद्यार्थियों को बहुत ध्यान से देखा, उनके साथ लगातार बातचीत की, और उन्हें खुलकर बात करने के लिए प्रोत्साहित किया। पता चला कि सभी 29 विद्यार्थी वंचित समुदायों से हैं। उनमें से अधिकतर अपने परिवार में विद्यालय आने वाले पहले बच्चे हैं। उनके माता-पिता दिहाड़ी मज़दूर के रूप में काम करते हैं, और अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए काफ़ी संघर्ष करते हैं। दिन भर काम करने के चलते, माता-पिता के पास अपने बच्चों को पढ़ाई में मदद करने के लिए बहुत कम समय बचता था।

मुझे यह महसूस हुआ कि डर, सज़ा और दबाव के कारण ये विद्यार्थी पढ़ाई-लिखाई से और भी ज़्यादा दूर हो रहे थे। उन्हें जिन चीज़ों की ज़रूरत थी, वे थीं—मदद और प्रोत्साहन।

सुगमकर्ता के रूप में शिक्षक की भूमिका

मैंने निश्चय किया कि मैं एक पारम्परिक शिक्षक नहीं, बल्कि सुगमकर्ता बनूँगा—सीखने में विद्यार्थियों की मदद करने वाला। अपने विद्यार्थियों को यह कहकर आश्वस्त किया कि मैं यहाँ कक्षा को नियंत्रित करने नहीं, सीखने में उनकी मदद करने के लिए आया हूँ। मैंने उनके लिए ऐसे मौक़े बनाए जहाँ वे सिर्फ़ सुनने की बजाय सक्रिय विद्यार्थियों के रूप में भूमिका निभाएँ। उन्हें बाल संसद, कक्षा की गतिविधियों, विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रमों, आदि में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

गतिविधियाँ और संसाधन

सबसे पहले, पढ़ाने के उन तरीकों को छोड़ा जो रटने, प्रतियोगिता पर आधारित थे। इनके स्थान पर सीखने के लिए गतिविधि-आधारित रणनीतियाँ अपनाईं जिनमें विद्यार्थी खुशी-खुशी, हिलते-डुलते, चर्चा करते हुए, और मज़ेदार खेलों के माध्यम से सीख सकें। उदाहरण के लिए, 'दृश्य शब्द' सिखाते समय मैंने एक आसान-सी गतिविधि करवाई। कक्षा में फ़र्श पर चॉक से कई गोले बनाए। कुछ गोलों में कूदना, झुकना, दौड़ना, चलना जैसे जाने-पहचाने क्रिया सम्बन्धी शब्द लिखे, वहीं कुछ में अन्दर और बाहर जैसे क्रिया सम्बन्धी निर्देश लिखे। फिर विद्यार्थियों से गोलों के चारों ओर खड़े होने को कहा।

जब मैं कोई शब्द बोलता तो विद्यार्थियों को तेज़ी से सही गोले में कूदना होता, और उस शब्द को ज़ोर से पढ़ना होता था। कभी-कभी उनसे छोटे-छोटे समूह बनाने को कहता, तथा अपने समूह के भीतर बारी-बारी से शब्दों को बोलने और इस गतिविधि में नए शब्द जोड़ने को कहता। इस गतिविधि से कक्षा में काफ़ी उत्साह पैदा हो गया। खेल के दौरान विद्यार्थी बार-बार शब्दों को



चित्र 2: छोटे समूह में पठन-पाठन और चर्चा-परिचर्चा

पढ़ते थे। इससे उन्हें कई 'दृश्य शब्द' पहचानने में मदद मिली। मैंने सीखने को मज़ेदार बनाने के लिए भाषा से जुड़े कुछ खेल शुरू किए। विद्यार्थियों का सबसे पसन्दीदा खेल था—'साइमन सेज़' यानी 'साइमन कहता है'। सबसे पहले, उन्हें समझाया कि यह कैसे खेला जाता है। फिर कुछ निर्देश दिए। जैसे—साइमन कहता है, "चलो"; साइमन कहता है, "दौड़ो"; साइमन कहता है, "झुको"; और साइमन कहता है, "कूदो"।

धीरे-धीरे निर्देशों को और मुश्किल बनाना शुरू कर दिया। सबसे पहले उनसे एक घेरे में बैठने को कहा, और फिर एक-एक करके हर विद्यार्थी के लिए कुछ वाक्यांश और वाक्य इस्तेमाल किए। जैसे—साइमन कहता है, "कुछ क्रदम चलो"; "दरवाज़ा बन्द करो"; "नोटबुक ले आओ"; "पंखा बन्द करो"; वगैरह। इस खेल के ज़रिए, विद्यार्थियों ने ध्यान से सुनना, निर्देशों को समझना, उनका पालन करना और वाक्यों में क्रिया शब्दों का इस्तेमाल करना सीखा। बाद में उन्हें 'साइमन' की भूमिका निभाने और अपने साथियों को निर्देश देने के लिए भी प्रोत्साहित किया।

मैंने देखा कि कक्षा में विद्यार्थियों के पढ़ने के लिए एक भी किताब नहीं थी। हमने अलग-अलग जगहों से लगभग 100 किताबें इकट्ठी कीं, और कक्षा में छोटी-सी लाइब्रेरी बना दी। किताबें इस तरह रखीं कि विद्यार्थी आसानी से उन्हें ले सकें।

इसके अलावा, कक्षा में दरवाज़ा, खिड़की, कुर्सी, टेबल, ब्लैकबोर्ड और पंखे जैसी चीज़ों पर लेबलिंग की। विद्यार्थियों को इस काम में शामिल किया ताकि वे शब्दों को पढ़ और पहचान सकें। हम सबने मिलकर शब्द कार्ड, वाक्य पट्टियाँ और चित्र कार्ड जैसे टीएलएम भी बनाए।

विद्यार्थियों को इन सामग्रियों का इस्तेमाल करने की पूरी आज़ादी थी। उन्होंने खुद ही किताबों को व्यवस्थित किया और कक्षा की अन्य चीज़ों की साज-सँभाल की। जब भी उनका पढ़ने का मन होता, वे कोई भी किताब उठा लेते और पढ़ना शुरू कर देते। वे किताबों का इस्तेमाल सावधानी से करते और पढ़ने के बाद एक दूसरे को उन्हें ठीक से रखने के लिए कहते। विद्यार्थियों में अपनेपन और ज़िम्मेदारी की भावना पैदा हुई।

समय बीतने के साथ, विद्यार्थी खुद ही पूछने लगे, “सर, क्या आज हम कोई नई गतिविधि कर सकते हैं?” सीखने के प्रति उनकी जिज्ञासा और उत्साह बढ़ता गया। जो विद्यार्थी पहले चुप रहते थे, उन्होंने हाथ उठाकर अपने विचार व्यक्त करने शुरू कर दिए। शर्मीले विद्यार्थी भी समूह चर्चा और कक्षा गतिविधियों में भाग लेने लगे। शान्त माहौल और शिक्षक-निर्देशित कक्षा एक संवादात्मक, आनन्दमय और विद्यार्थी-केन्द्रित सीखने के माहौल में बदल गई।

सकारात्मक प्रोत्साहन

पारम्परिक कक्षाओं में जब विद्यार्थी गलती करते हैं तो उन्हें अकसर डाँटा-फटकारा जाता है। इससे वे अपमानित महसूस करते हैं, और उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुँचती है। मेरी कक्षा में गलतियों को सीखने की एक स्वाभाविक प्रक्रिया माना जाता है।

सजा देने की बजाय, हर विद्यार्थी पर व्यक्तिगत ध्यान देना शुरू किया, और उन्हें सकारात्मक प्रोत्साहन दिया। उदाहरण के लिए, हिमांशु 'b' ध्वनि पर काम करते समय 'd' लिख देता था। उसे उदाहरणों की मदद से दोनों ध्वनियों का अन्तर तब तक समझाया जब तक उसे दोनों के सही प्रयोग का पूरा विश्वास नहीं हो गया।

इसी तरह, 'A letter from Hingoli' वाले पाठ के दौरान प्रदीप ने "My deer friend" लिख दिया। उसे 'deer' और 'dear' के बीच का अन्तर समझाया, और उदाहरण देकर बताया कि उनका इस्तेमाल कहाँ और कैसे किया जाता है।

मैंने विद्यार्थियों को बिना डरे काम करने के लिए प्रेरित किया। उन्हें भरोसा दिलाया कि गलतियाँ करना खराब बात नहीं है। सिर्फ सही जवाबों पर ध्यान देने की बजाय, उनके प्रयासों, प्रगति और प्रतिभाग करने की कोशिशों की सराहना की। उदाहरणार्थ, तृप्ति जैसी कुछ छात्राओं को शुरू में पढ़ने में दिक्कत होती थी। उन्हें प्यार से समझाया और लगातार उनका हौसला बढ़ाया। समूह गतिविधियाँ, आपसी सहयोग, सकारात्मक प्रोत्साहन और प्रतिभागिता के मौके, इन सभी बातों ने उन्हें ज़्यादा सक्रिय व आत्मविश्वासी बनने में मदद की।

“

मेरी कक्षा में गलतियों को सीखने की एक स्वाभाविक प्रक्रिया माना जाता है।

”

इन उपायों ने विद्यार्थियों को असफलता की परवाह किए बगैर सक्रिय प्रतिभागी बनने के लिए प्रेरित किया। हमने इस बात पर जोर दिया कि सीखना महत्वपूर्ण है। यह बिना तनाव या बोझ के ही सम्भव है।

मिलकर कक्षा के नियम बनाना

कक्षा में बेहतर माहौल बनाने में सभी विद्यार्थियों ने भाग लिया। 'बाल संसद' में, हमने अपनी कक्षा के नियमों पर बात की।

जैसे—हम कक्षा की देखभाल कैसे करेंगे; हमारे पढ़ने का समय क्या होगा; हमारी रोज़ की दिनचर्या कैसी होगी; आदि।

हमने कुछ और विषयों पर भी चर्चा की। मिसाल के तौर पर, हमें कक्षा में सभी का सम्मान करना चाहिए; अपनी कक्षा को साफ़ रखना चाहिए; आदि। इन विषयों पर चर्चा करते समय विद्यार्थियों को और गहराई से सोचने के लिए प्रेरित किया। उनसे पूछा कि हम इन बातों को कैसे अमल में ला सकते हैं। उन्होंने सुझाव देने शुरू किए जिन्हें मैं ब्लैकबोर्ड पर लिखता गया। जैसे—हमें कोई प्रश्न पूछने के लिए अपना हाथ ऊपर उठाना चाहिए; कूड़ा हमेशा कूड़ेदान में ही डालना चाहिए; हमें अपने खेलों में सभी को शामिल करना चाहिए; आदि।

बोर्ड पर 15-20 नियम लिखने के बाद, हम समूहों में एक साथ बैठे और कागज़ की पट्टियों पर ये नियम लिख लिए। फिर उन्हें दीवारों पर चिपका दिया। चूँकि ये नियम विद्यार्थियों ने खुद बनाए थे, इसलिए उन्होंने इनका पालन भी ज़्यादा ईमानदारी से किया। कक्षा अब एक सुरक्षित जगह बन गई जहाँ विद्यार्थी बिना किसी हिचकिचाहट के सवाल पूछने, मदद माँगने और अपनी राय जाहिर करने में खुद को स्वतंत्र महसूस कर रहे थे। सामूहिक फ़ैसला लेने की इस प्रक्रिया ने विद्यार्थियों के साथ मेरे रिश्ते को और मज़बूत किया।



चित्र 3: बाल संसद में विद्यार्थियों ने खुद बनाए कक्षा के नियम

आकलन के तरीके

पारम्परिक तरह से किए जाने वाले आकलन, जिनमें विद्यार्थियों को सवालों के रटे हुए जवाब देने होते हैं, विद्यार्थियों को अकसर



चित्र 4 : ओपन-बुक टेस्ट में शामिल विद्यार्थी

“ औपचारिक साप्ताहिक परीक्षाओं के महत्त्व को कम किया, और आकलन के अलग तरीके अपनाए। इनमें स्व-आकलन, परस्पर-आकलन, समूह कार्य, चर्चाएँ, मौखिक जवाब, आदि शामिल थे। ”

नीरस लगते हैं, और उनमें भय भी जगाते हैं।

इस समस्या को सुलझाने के लिए, मैंने कुछ 'बाल-केन्द्रित आकलन उपकरण' (child-centric assessment tools) बनाए। इनमें से पहला था—'ओपन-बुक टेस्ट'। इसमें मैं किसी खास विषय या अवधारणा पर आधारित 'अनुमानात्मक प्रश्न' (inferential questions) पूछता, और विद्यार्थियों से कहता कि उनके उत्तर खुद ही ढूँढ़ें। उन्हें कक्षा की सामग्री और पाठ्यपुस्तकों का उपयोग करने की अनुमति होती थी। इस तरह विद्यार्थियों के मन से कम अंक आने या पास / फ़ेल होने का डर जाता रहा।

दूसरी बात, मैंने कुछ सरप्राइज़ टेस्ट लेने शुरू किए। इनका मक़सद विद्यार्थियों की समझ को परखना था, न कि उनकी रटने की क्षमता को। मैंने ब्लैकबोर्ड पर कहानियों या कविताओं पर आधारित कुछ सवाल लिखे, और विद्यार्थियों से कहा कि वे अपनी नोटबुक, कहानी की किताबें, शब्द कार्ड, वाक्य पट्टियाँ और फ़्लैश कार्ड देखकर उनके जवाब दें। उदाहरण के लिए, 'A letter from Hingoli' पाठ पढ़ने के बाद पारम्परिक टेस्ट लेने की बजाय, ब्लैकबोर्ड पर कुछ सवाल लिखे। जैसे—

रमन कहाँ रहता है;

गाँव में किस जगह के पास पुस्तकालय है;

रमन अपनी चिट्ठी में पुस्तकालय का ज़िक्र क्यों करता है; आदि।

विद्यार्थियों को अपनी नोटबुक, कहानी की किताबें, शब्द कार्ड और फ़्लैश कार्ड देखने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि वे अपने जवाब खुद ढूँढ़ सकें। कुछ विद्यार्थियों ने पाठ के क्रम को याद करने के लिए पाठ्यपुस्तक देखी।

उन्होंने अपने साथियों के साथ बातचीत की, सही शब्दों को खोजा, और तयशुदा जवाब रटने की बजाय खुद के जवाब तैयार किए। कक्षा का माहौल शान्त और खुशनुमा रहा। विद्यार्थियों ने किसी औपचारिक परीक्षा का दबाव भी महसूस नहीं किया, इसीलिए उन्होंने बहुत उत्साह के साथ इस आकलन में भाग लिया।

धीरे-धीरे औपचारिक साप्ताहिक परीक्षाओं के महत्त्व को कम किया, और आकलन के अलग तरीके अपनाए। इनमें स्व-आकलन, परस्पर-आकलन (peer assessment), समूह कार्य, चर्चाएँ, मौखिक जवाब, आदि शामिल थे।

अँग्रेजी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।



राकेश शिवनाथ राजपूत स्व. प्रतापसिंह शं. उपाख्य बाळासाहेब देशमुख (जरुडकर) माध्यमिक विद्यालय, जरुड, अमरावती, महाराष्ट्र में शिक्षक हैं। इससे पहले आप अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़े थे। आप टाटा ट्रस्ट-CSPC, गुजरात में एकेडमिक कोऑर्डिनेटर (FLN) भी रहे। आपने राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल में अँग्रेजी विषय के सलाहकार के रूप में भी कार्य किया है।

सम्पर्क : rakeshrajput3675@gmail.com